अहलेबैत की मुहब्बत और इताअत

सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लहिल उज़मा अल्लामा सै0 अली नक़ी नक़वी

कोई शक नहीं कि अहलेबैते मासूमीन अलैहिमुस्सलाम की मुहब्बत नजात का रास्ता है। मगर मुहब्बत के लिए इताअत एक ज़रूरी फरीज़ा है। बिना इताअत, मुहब्बत के दावे को खुद अहलेबैत ने नाक़ाबिले क़बूल क़रार दिया है।

पहली हदीस:

अली (अ0) बिन मुहम्मद (अ0) ने इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) से कहाः ''कुछ लोग आपके दोस्तों में गुनाह करते हैं और कहते हैं कि हमें नजात की उम्मीद है।''

हज़रत ने फरमायाः

''यह लोग झूठे हैं, वह हमारे दोस्त नहीं। यह ऐसे लोग हैं जिन पर अमानी यानी ग़लत ख़याल ने ग़लबा कर लिया है। जो किसी चीज़ की उम्मीद करता है वह उसे हासिल करने के लिए भी काम करता है और जो किसी चीज़ से डरता है वह उससे भागता है।''

याद रखना चाहिए कि यह अमानी का लफ्ज़ वही है जो कुर्आन में यहूदियों और ईसाईयों के बारे में इस्तेमाल किया गया है।

वह कहते हैं कि जन्नत में नहीं दाख़िल होगा मगर वही जो यहूदी और ईसाई हो। यह उनके अमानी, अपने बनाए ख़याल हैं। कहो कि तुम अपने इस दावे का सबूत पेश करो, अगर सच्चे हो।

इसी लफ्ज़ को फिर कुर्आन मजीद ने तमाम मुसलमानों से कहते हुए इस्तेमाल किया हैः

न तुम्हारे अपने बनाए ख़याल से कुछ होता है और न यहूदियों और ईसाईयों के बनाए हुए ख़याल से। जो बुरे काम करेगा उसको उनकी सज़ा मिलेगी और अमानी की लफ्ज़ को इमाम (अ0) ने अपने मुहब्बत करने वालों के बारे लगा दिया है।

दूसरी हदीस:

मुहम्मद बिन मुस्लिस।

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) का इरशाद हैः ''देखो इधर–उधर नहीं बहको। ख़ुदा की क़सम हमारे शिया सिर्फ़ वही हैं जो अल्लाह की इताअत करें।''

तीसरी हदीस:

जाबिर की रिवायत।

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) ने फरमायाः ''ख़ुदा की क़सम हमारे शिया सिर्फ वह हैं जो अल्लाह के फराएज़ का ख़याल रखें और उसकी इताअत करें। ऐ जाबिर! शियों की तो पहचान ही यही है कि उनमें नीचे दी हुई ख़ूबियाँ पाई जाएँः

झुक कर मिलना, नर्मी से काम लेना, अमानतदारी, अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करना, रोज़ा, नमाज़, माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक, पड़ोस में जो ग़रीब, फक़ीर, कर्ज़दार और यतीम रहते हों उनकी ख़बर करते रहना, ज़बान की सच्चाई, कुर्आन की तिलावत और ज़बान को रोकना सब से मगर नेकी के साथ। और यह लोग हमेशा अपनी क़ौम और क़बीले में इतने भरोसे वाले होते थे कि इनके पास अमानतें

बक़िया................पेज 9 पर

रिवायत की हुई कुछ हदीसों में यह भी है कि ''उनके बुजुर्ग बाप का नाम मेरे बुजुर्ग बाप के नाम ही जैसा होगा'' और कुछ रिवायतों में है कि ''वह मेरे बेटे हसन की औलाद से होगा'' इसी बुनियाद पर शैख़ मुहम्मद मुन्तसिर लेबनानी ने इमाम का मुबारक नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह और आपको हसनी लिखा है। हालांकि शियों के नज़दीक सभी के यहाँ आपके बाप का नाम इमाम हसन असकरी है और आप हसनी नहीं हुसैनी हैं। इस इख़्तेलाफ की वजह देखने में रिवायत करने वाले का शक है। रसूल (स0) ने फरमाया होगाः ''उसके बाप का नाम मेरे बेटे इमाम हसन (अ0) के नाम की तरह होगा'' रिवायत की किताबत में नून का नुक़ता रह गया और इब्नी के बजाए पढ़ने वाले ने अबी पढ़ा। इसी तरह रसूल (स0) ने फरमाया होगा ''वह उसके बेटे होंगे'' जिसका नाम हसन होगा और रिवायत करने वाला समझा इससे मतलब है कि वह इमाम हसन (अ0) की औलाद में होंगे। और इसकी दलील यह है कि अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम से रिवायत होने वाली मुतवातिर हदीसों में साफ़ है कि आप हुसैनी और इमाम हसन असकरी के बेटे हैं। घर वाले ही घर की बातों को बेहतर समझ सकते हैं। इसलिए अहलेबैत की रिवायतें इसकी वज़ाहत के लिए बहुत अच्छा रास्ता हैं।

□□□

बक़िया .... अहलेबैत की मुहब्बत और इताअत

रखवाई जाती थीं। आख़िर में हज़रत (अ0) ने फरमायाः ''ख़ुदा की क़सम, ऐ जाबिर! कोई शख़्स अल्लाह के दरबार में इताअत के बिना क़रीब नहीं हो सकता और हमारे पास जहन्नम की आग से बचाने का कोई परवाना नहीं है और न अल्लाह के मुक़ाबले में किसी की दलील चल सकती है। जो अल्लाह की इताअत करे वह हमारा दोस्त है और जो अल्लाह की नाफ़रमानी करे वह हमारा दुश्मन है। और हमारी मुहब्बत का फ़ायदा सिर्फ अमल और परहेज़गारी से हासिल हो सकता है।

चौथी हदीसः

उमर बिन ख़ालिद।

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) ने फरमायाः ''ऐ आले रसूल के शियो! तुम्हें तो दुनिया के लिए मिसाल होना चाहिए कि आगे बढ़ने वाले और पीछे रहने वाले सब तुम्हारी तरफ़ पलट कर आएँ।''

फिर फ़रमायाः ''ख़ुदा की क़सम! हमारे पास अल्लाह की तरफ से जहन्नम की आग से बचाने का परवाना नहीं है और न हमारी अल्लाह से कोई रिश्तेदारी है। न अल्लाह के मुक़ाबले में कोई दलील चल सकती है और न अल्लाह के दरबार में क़रीब होने का इताअत के सिवा कोई रास्ता है। जो तुम में से अल्लाह की इताअत करने वाला हो उसे हमारी मुहब्बत फ़ायदा पहुँचा सकेगी और जो तुम में से अल्लाह की नाफ़रमानी करता रहेगा उसे हमारी मुहब्बत के दावे से कोई फायदा नहीं पहुँच सकता। ख़बरदार धोखा न खाओ। ख़बरदार धोखा न खाओ।''